निकाह का खुतबा

मौलाना सय्यद हामिद अली

بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ

'बिसमिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम'

''अल्लाह के नाम से जो बहुत रहमवाला, बड़ा मेहरबान है''

निकाह का ख़ुतबा

तिरमिज़ी, अबू दाऊद, नसई इब्न माजा, अहमद, दारमी जैसी हदीसों की विश्वस्त किताबों में यह रिवायत नक़ल की गई है कि अल्लाह के रसूल हज़रत मुहम्मद (सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम) ने प्यारे सहाबा (रज़ि०) को नमाज़ पढ़ने के लिए जिस तरह तशहहुद की तालीम दी थी उसी तरह उन्हें 'ख़ुत्ब-ए-हाजत' भी सिखाया था, जो निकाह और दूसरे अहम मौक़ों पर पढ़ा जाता। यह ख़ुत्ब-ए-मसनूना ऐसे मौक़ों पर पढ़ा जाना चाहिए। साथ ही इसकी शिक्षाओं से लोगों को वाक़िफ़ कराना चाहिए। इसमें प्यारे नबी (सल्ल०) की सुन्नत की पैरवी भी है और इस्लाम की क़ीमती हिदायतों को जानने का बेहतरीन ज़रिया भी। 'ख़ुत्ब-ए-मसनूना' यह है —

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنَعُوْذُ
بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ
اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ
اَنْ لَّآ اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ.
اَمَّا بَعْدُ .
يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اتَّقُوْا رَبَّكُمُ الَّذِيْ خَلَقَكُمْ مِّنْ نَّفْسٍ
وَّاحِدَةٍ وَّخَلَقَ مِنْهَا زَوْجَهَا وَبَثَّ مِنْهُمَا رِجَالًا كَثِيْرًا
وَّنِسَآءً ۚ وَاتَّقُوا اللّٰهَ الَّذِيْ تَسَآءَلُوْنَ بِهٖ وَالْاَرْحَامَ ؕ
اِنَّ اللّٰهَ كَانَ عَلَيْكُمْ رَقِيْبًا ۝ يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا
اتَّقُوا اللّٰهَ حَقَّ تُقٰتِهٖ وَلَا تَمُوْتُنَّ اِلَّا وَاَنْتُمْ مُّسْلِمُوْنَ ۝
يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوا اتَّقُوا اللّٰهَ وَقُوْلُوْا قَوْلًا سَدِيْدًا ۝
يُّصْلِحْ لَكُمْ اَعْمَالَكُمْ وَيَغْفِرْ لَكُمْ ذُنُوْبَكُمْ ؕ وَمَنْ
يُّطِعِ اللّٰهَ وَرَسُوْلَهٗ فَقَدْ فَازَ فَوْزًا عَظِيْمًا ۝

अलहम्दु लिल्लाहि नह-मदुहू व नस-त'ईनुहू व नस्तग़-फ़िरुहू व नऊज़ुबिल्लाहि मिन शुरूरि अनफ़ुसिना व मिन सय्यिआति अ'अमालिना मयँ-यहदिहिल्लाहु फ़ला मुज़िल्-ल-लहू व मयँ-युज़लिलहु फ़ला हादि-य लहू व अशहदु अल्ला इला-ह इल्लल्लाहु व अशहदु अन-न मुहम्मदन 'अब्दुहू व रसूलुहू अम्मा ब'अद।

या अय्युहन-नासुत्-तकू रब्बकुमुल्लज़ी ख़-ल-क़-कुम मिन-नफ़सिवँ वाहि-दतिवँ व ख़-ल-क़ मिन्हा ज़ौ-जहा व बस-स मिन्हुमा रिजालन कसीरवँ व निसाअ। वत-तकुल्लाहल्लज़ी तसा-अलू-न बिही वल-अरहाम। इन्नल्ला-ह का-न अलैकुम रक़ीबा। या-अय्युहल्लज़ी-न आमनुत-तकुल्ला-ह हक़-क़ तुक़ातिही वला तमूतुन-न इल्ला व अनतुम मुसलिमून। या अय्युहल्लज़ी-न आमनुत-तकुल्ला-ह व कूलू क़ौलन सदीदा। युसलिह-लकुम अ'अमा-लकुम व यग़फ़िर-लकुम ज़ुनू-बकुम व मयँ-युति'इल्ला-ह व रसू-लहू फ़क़द फ़ा-ज़ फ़ौज़न 'अज़ीमा ।

बस यह है अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का ख़ुतबा। इसके दो हिस्से हैं, पहले हिस्से में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) के अपने कथन और कलिमात हैं, इस हिस्से का तर्जुमा यह है —

"शुक्र व तारीफ़ अल्लाह के लिए! हम उसका शुक्र अदा करते हैं। हम उससे मदद माँगते हैं, हम उससे (अपने गुनाहों की) माफ़ी चाहते हैं और अपने नफ़्स की बुराइयों और अपने बुरे कामों (के बुरे नतीजों) से बचने के लिए अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह हिदायत दे उसे बहकानेवाला कोई नहीं

और जिसे वही भटका दे उसे राह दिखानेवाला कोई नहीं। मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत और बन्दगी के लायक़ नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्ल०) उसके बन्दे और उसके रसूल हैं।''

इसके बाद प्यारे नबी (सल्ल०) क़ुरआन मजीद की चार आयतें पढ़ते, जिनका तर्जुमा इस प्रकार है —

''ऐ लोगो! अपने रब से डरो और उसकी नाफ़रमानी से बचो जिसने तुमको एक ही जान से पैदा किया और उसी से उसका जोड़ा बनाया और उन दोनों से बहुत-से मर्द व औरत (दुनिया में) फैला दिए, और अल्लाह का तक़वा इख़्तियार करो जिसके ज़रिए तुम (अपना हक़) एक-दूसरे से माँगते हो, और रिश्तों का भी ख़याल रखो, निश्चय ही अल्लाह तुम्हारी निगरानी कर रहा है।'' (क़ुरआन, 4:1)

''ऐ ईमानवालो! अल्लाह से डरो और उसकी नाफ़रमानी से बचो, जैसा कि उससे डरने और उसकी नाफ़रमानी से बचने का हक़ है और तुम्हें हरगिज़ मौत न आए मगर इस हाल में कि तुम मुसलिम (अल्लाह के फ़रमाँबरदार) हो।'' (क़ुरआन, 3:102)

''ऐ ईमान लानेवालो! अल्लाह से डरो, उसकी नाफ़रमानी से बचो, और (हमेशा) सीधी-सच्ची बात कहो, अल्लाह तुम्हारे कामों को दुरुस्त कर देगा। तुम्हारे लिए तुम्हारे गुनाहों को माफ़ कर देगा, और जो अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) की इताअत (आज्ञापालन) करेगा, वह बड़ी सफलता प्राप्त करेगा।''

(क़ुरआन, 33:70-71)

यह है ख़ुतबे के दोनों हिस्सों का मतलब — अब हम इसकी थोड़ी-सी व्याख्या भी बयान करेंगे।

हम अल्लाह का शुक्र अदा करते हैं !

दीन की पहली और सबसे अहम बुनियाद ख़ुदा को जानना है। व्यक्ति हो या समाज, हर-एक की इसलाह व सुधार के लिए ख़ुदा से पच्चा और सही ताल्लुक़ ज़रूरी है। इसके बिना न व्यक्ति की तरबियत हो सकती है और न समाज का न्याय संगत और वास्तविक उत्थान मुमकिन है। ख़ुदा को माने और जाने बिना इनसानों और क़ौमों के आपसी सम्बन्ध भी कभी सही और मधुर नहीं हो सकते।

इस जगत को और सारे इनसानों को अल्लाह ने पैदा किया है। वही हमें और जगत की हर-हर चीज़ को पाल रहा है। हमारे पास या किसी के पास जो कुछ है उसी का दिया हुआ है। हमारा वुजूद और हमारा दिल-दिमाग़, हमारी रूह और हमारा एक-एक अंग, ज़मीन जिस पर हम रहते हैं, हवा— जिसमें हम साँस लेते हैं, पानी— जो हम पीते हैं, खाना— जो हम खाते हैं, सूरज की गर्मी और रौशनी— जिससे ज़मीन के और हमारे सारे कामों का सम्बन्ध है, वे तमाम सलाहियतें और कुव्वतें— जिसके बल पर इनसान ज़मीन को, समुद्र को, अंतरिक्ष और वायुमंडल को अपने क़ब्ज़े में कर रहा है, चाँद पर पहुँच गया है और दूसरे ग्रहों तक पहुँचना चाहता है, वे संसाधन और क़ुदरती भंडार— जो ज़मीन के अन्दर और ऊपर, समुद्र के अन्दर और ऊपर, और वायुमंडल, अंतरिक्ष और उपग्रहों में मौजूद हैं, ये सब ख़ुदा के पैदा किए हुए हैं और उसी के प्रदान किए हुए हैं। हमारी बीवी, बच्चे, माँ-बाप, रिश्तेदार, घर व दुकानें, सामान, जायदाद और सम्पत्तियाँ सब ख़ुदा की दी हुई हैं। हम दाएँ-बाएँ, आगे-पीछे, ऊपर-नीचे,

अन्दर-बाहर, हर तरफ़, हर जगह, हर वक़्त ख़ुदा के अथाह एहसानों में डूबे हैं, जिन्हें हम गिन भी नहीं सकते —

''अगर तुम अल्लाह के एहसानों को गिनना चाहो तो तुम उनको गिन नहीं सकते.....।'' (क़ुरआन, 14:34)

अल्लाह के इन महान और असीम इनामों का तक़ाज़ा है कि हम सिर से पैर तक शुक्र बन जाएँ। दिल व दिमाग़ और पूरे वुजूद से अपने एहसान करनेवाले और मेहरबान मालिक के आगे झुक जाएँ, हमारा दिल उसकी मुहब्बत से, हमारा दिमाग़ उसके एहसानों की याद और ख़ुदा की पहचान से, हमारी ज़बान उसकी तारीफ़ व शुक्र से और हमारी ज़िन्दगी उसकी इताअत व बन्दगी से आबाद हो और हम उसके वफ़ादार व जाँनिसार बन्दे बन जाएँ।

सूरा फ़ातिहा क़ुरआन मजीद की पहली सूरा और पूरे क़ुरआन का निचोड़ और रूह है, और इसी लिए यह सूरा नमाज़ की हर रकअत में पढ़ी जाती है। सूरा फ़ातिहा की पहली आयत अल-हम्दुलिल्लाहि रब्बिल 'आ-लमीन, (शुक्र व तारीफ़ अल्लाह, जगत के पालनहार के लिए) है। अल्लाह के रसूल (सल्ल०) भी हर ख़ुतबे और तक़रीर की इबतिदा अल्लाह की तारीफ़ से करते थे। यह इस बात का सुबूत है कि पूरे दीन की बुनियाद और उसका नुक़्त-ए-आग़ाज़ (आरम्भ बिन्दु) अल्लाह का शुक्र है। मुसलिम उम्मत को दुनिया की इमामत और हक़ की गवाही देने की ज़िम्मेदारी सौंपने के बाद पहली बुनियादी हिदायत यह दी गई थी —

''मुझे याद रखो, मैं तुम्हें याद रखूँगा। मेरा शुक्र अदा करो, मेरी नाशुक्री न करो।'' (क़ुरआन, 2:152)

इनसान आम तौर से ख़ुशी व आराम और दौलत व ताक़त पाकर

ख़ुदा को भूल जाता है। घमण्ड के नशे में आपे से बाहर हो जाता है। शान व शौकत और ख़ुशी व नेमतें पाकर ज़ुल्म व ज़्यादती, नाफ़रमानी व बुराई और ख़्वाहिशपरस्ती व नफ़्सानियत की राह पर चल खड़ा होता है। हम मुसलमान भी जो अल्लाह और उसके रसूल (सल्ल०) के माननेवाले हैं, शादी-ब्याह के मौक़े पर हर रिश्तेदार और हर दोस्त को राज़ी और ख़ुश करने की बड़ी कोशिश करते हैं, मगर अपने कामों से अल्लाह और उसके रसूल को जान-बूझकर नाराज़ करते हैं। गुनाह, गुमराही, नाफ़रमानी, बुराई और दिखावे के जितने काम शादी-ब्याह के मौक़े पर होते हैं, शायद ही किसी और मौक़े पर होते हों। शैतान इस मौक़े पर नंगा-नाच नाचता है और हम मुसलमान होते हुए शैतान के नंगे-नाच में शरीक होते और अपने ही हाथों अपनी दुनिया व आख़िरत ख़राब करते हैं।

ऐसा क्यों होता है, इसलिए कि हम भूल जाते हैं कि हर ख़ुशी, हर नेमत और हर कामयाबी ख़ुदा और सिर्फ़ ख़ुदा देता है और वही किसी भी समय उसे छीन सकता है। औलाद और उसकी ख़ुशियाँ भी ख़ुदा ही के देने से हमें मिलती हैं और वही किसी भी वक़्त इन ख़ुशियों को हमसे छीन सकता है। और एक वक़्त आता है जबकि दुनिया की तमाम ख़ुशियाँ एक-एक करके हमसे छिन जाती हैं। इसलिए इन ख़ुशियों को पाकर आपे से बाहर होने के बजाए समझदार और शरीफ़ इनसान की तरह हमें ख़ुदा के आगे शुक्र व एहसानमंदी के साथ झुक जाना चाहिए और उसकी दी हुई नेमतों को उसकी मरज़ी के ख़िलाफ़ इस्तेमाल नहीं करना चाहिए। अगर हम ऐसा करेंगे तो ख़ुदा पर एहसान न करेंगे, अपना ही भला करेंगे। हम आख़िरत में अल्लाह की हमेशा

रहनेवाली और असीम नेमतों के हक़दार होंगे, जो सदा रहनेवाली ज़िन्दगी में हमें हासिल होंगी और दुनिया में भी ख़ुदा हमपर अपनी नेमतों की बारिश फ़रमाएगा। लेकिन अगर हमने उसकी नाशुक्री व नाफ़रमानी की राह इख़्तियार की तो हम दुनिया व आख़िरत दोनों में उसके सख़्त अज़ाब से दोचार होंगे —

"और देखो तुम्हारे रब ने एलान कर दिया था कि अगर तुम शुक्र करोगे तो मैं यक़ीनन तुम्हें और ज़्यादा नेमतें दूँगा और अगर नाशुक्री करोगे तो निस्संदेह मेरा अज़ाब बहुत सख़्त है।"

(क़ुरआन, 14:7)

हम अल्लाह से मदद माँगते हैं

अल्लाह हमारा पैदा करनेवाला, मालिक, पालनहार, हमपर एहसान करनेवाला और माबूद (पूज्य) है। इन तमाम रिश्तों का तक़ाज़ा है कि हम सिर से पैर तक शुक्र होकर ज़ाहिर व बातिन (बाहर एवं अंदरून) दोनों में उसके सच्चे और मुख़लिस बन्दे बन जाएँ। लेकिन जब हम इस राह पर चलने का इरादा करते हैं तो सबसे पहले ख़ुद हमारा नफ़्स और हमारा मन सबसे बड़ी रुकावट बनकर खड़ा होता है और बराबर रुकावट बना रहता है। वह शैतान के उभारने पर ख़त्म न होनेवाली हसीन व जमील ख़्वाहिशों की एक बड़ी फ़ौज रास्ते में ला खड़ा कर देता है, जो हक़ के कारवाँ पर बराबर हमला करती रहती है —

हज़ारों ख़्वाहिशें ऐसी कि हर ख़्वाहिश पे दम निकले,
बहुत निकले मेरे अरमान लेकिन फिर भी कम निकले।

ख़ुशी और शादी-ब्याह के मौक़ों पर ख़्वाहिशों का हुजूम होता है,

हर शख़्स चाहता है कि उसके सारे अरमान इसी मौक़े पर निकल जाएँ, चाहे इनसान का रिश्ता ख़ुदा और रसूल से टूट जाए। फिर दुनिया के फ़ायदे और रंगीनियाँ इनसान का दामन पकड़ती हैं और आहिस्ता-आहिस्ता उसे जहन्नम की तरफ़ ले जाना चाहती हैं। अगर इनसान इन दोनों ख़ूबसूरत जालों से बच निकले तो घर के अन्दर-बाहर, समाज, बस्ती और मुल्क में अपने और पराए, सारे ख़ुदा-फ़रामोश इनसान राहे हक़ में ज़बरदस्त रुकावट बनकर खड़े हो जाते हैं और अभी इनसान उनसे निपट ही रहा होता है कि हुकूमत अपनी पुलिस, फ़ौज, जेल, तौक़ व बेड़ियाँ और फाँसी के फंदे से मोमिन का इस्तिक़बाल करने के लिए आ मौजूद होते हैं, अब वह क्या करे? क्या ख़ुदा से ताल्लुक़ तोड़ ले? क्या वह अल्लाह का शुक्रगुज़ार बन्दा बनकर न रहे? नहीं, यह तो दुनिया व आख़िरत दोनों की तबाही की राह है, वह ख़ुदा का दामन नहीं छोड़ेगा। वह ख़ुदा की राह पर चलने के लिए ख़ुदा ही से मदद माँगेगा — नमाज़ में बार-बार ख़ुदा से यही मदद तो माँगता है —

''हम तेरी ही बन्दगी करते और तुझी से मदद माँगते हैं।''

वह जानता है कि ज़मीन से लेकर आसमान तक पूरे जगत में ख़ुदा ही का हुक्म चलता है, उसके सिवा किसी के पास कोई ताक़त नहीं, ज़िन्दगी, मौत, नफ़ा, नुक़सान, इज़्ज़त, ज़िल्लत, हुकूमत, दौलत, ताक़त, रोज़ी, औलाद, क़िस्मत, कामयाबी, नाकामी, दुनिया, आख़िरत सब उसी के हाथ में है, उसके सिवा किसी के पास कुछ नहीं, वह ख़ुदा के सिवा किसी से नहीं डरता। वह सिर्फ़ ख़ुदा से डरता है और हमेशा उसी पर भरोसा करता है —

''ये वे हैं कि जब इनसे लोगों ने कहा : लोगों ने तुम्हारे

ख़िलाफ़ (बहुत-सा साज़ो सामान) जमा कर रखा है तो तुम उनसे डरो, तो उनका ईमान और बढ़ गया, और उन्होंने कहा : अल्लाह हमारे लिए काफ़ी है और वह बेहतरीन कारसाज़ है।''

(क़ुरआन, 3:173)

अल्लाह के ये ईमान भरे अल्फ़ाज़ उसके कानों में गूँजते रहते हैं :

''जो अल्लाह पर भरोसा करता है, अल्लाह उसके लिए काफ़ी है।'' (क़ुरआन, 65:3)

वह जानता है कि वह कमज़ोर है। वह नफ़्स के फंदों का, शैतान के वसवसों का, सांसारिक प्रलोभनों का, अन्दर और बाहर के सख़्त दबाव का और हुकूमत में बैठे लोगों के ज़ुल्म व सितम का हरगिज़ मुक़ाबला नहीं कर सकता। इस राह में ख़ुदा ही उसकी मदद कर सकता है और वह उसकी मदद के बिना एक क़दम भी नहीं उठा सकता। वह बेताबी के साथ ख़ुदा का दामन थाम लेता है, रो-रोकर और गिड़गिड़ा-गिड़गिड़ाकर उससे मदद माँगता है और बेफ़िक्र हो जाता है कि उसने सबसे बड़े बल्कि एक ही बड़े की मदद हासिल कर ली है। 'अल्लाहु अकबर' अल्लाह ही बड़ा है।

हम अल्लाह से अपने गुनाहों की माफ़ी चाहते हैं

मोमिन बन्दा अपनी ओर से पूरी कोशिश करता है कि उससे उसके मालिक की कोई नाफ़रमानी न हो। लेकिन वह इनसान है, उसके नफ़्स के अन्दर और बाहर अनगिनत ताक़तें उसे सच्चाई के रास्ते से हटाने के लिए ज़ोर लगाती रहती हैं। वह ख़ुद भी भूल-चूक और ग़फ़लत का शिकार हो जाता है। और वह छोटी-बड़ी ग़लती कर ही बैठता है। वह काँप उठता है, वह जानता है कि अल्लाह की नाफ़रमानी का अंजाम ख़ौफ़नाक है। वह यह भी जानता है कि उसने अगर अपनी ग़लती से तौबा न की तो उससे ग़लतियों पर ग़लतियाँ होती चली जाएँगी, यहाँ तक कि उसकी ज़िन्दगी गुनाहों में डूब जाएगी और उसका दिल मुर्दा हो जाएगा और फिर वह ख़ुदा की तरफ़ पलट भी न सकेगा। उसे याद आता है कि अल्लाह ने उसे तौबा करने की नसीहत की थी।

वह रोता-गिड़गिड़ाता ख़ुदा से अपने गुनाहों की माफ़ी माँगता और गुनाहों से बचने का अहद (संकल्प) करता है और अल्लाह से फ़रमाँबरदारी और बन्दगी का रिश्ता जोड़ लेता है।

सच्चा मुसलमान सब कुछ ख़ुदा की राह में लुटा देने के बाद भी यह नहीं समझता कि उसने ख़ुदा की बन्दगी का हक़ अदा कर दिया। वह क्या और उसकी हैसियत क्या! वह ख़ुदा की अथाह नेमतों का हक़ कैसे अदा कर सकता है। उसके पास अपना कुछ भी नहीं, जो कुछ है ख़ुदा का है।

उसे मालूम है कि अल्लाह के रसूल (सल्ल०) गुनाहों से पाक थे।

उनसे बढ़कर किसी ने अल्लाह की बन्दगी नहीं की, न कर सकता है, लेकिन वे एक-एक दिन में सौ-सौ बार अल्लाह से इस्तिग़फ़ार (तौबा) करते। हम सरापा ख़ता हैं, हम तौबा व इस्तिग़फ़ार के ज़्यादा मोहताज हैं। ख़ास तौर से ऐसे मौक़ों पर जबकि गुनाहों के होने की संभावना ज़्यादा हो।

हम अल्लाह की पनाह में आते हैं

''हम अपने नफ़्स की शरारतों और बुरे कर्मों (के कुपरिणाम) से बचने के लिए अल्लाह की पनाह में आते हैं। जिसे अल्लाह हिदायत दे उसे बहकानेवाला कोई नहीं और जिसे वही भटकने दे उसे राह दिखानेवाला कोई नहीं।''

ये अल्फ़ाज़ बताते हैं कि मोमिन बन्दा अल्लाह की पनाह में क्यों आता है। दुनिया की हर नेमत की तरह, अल्लाह की सबसे बड़ी नेमत, हिदायत भी ख़ुदा के बख़्शने से मिलती है। दुनिया व आख़िरत की फ़लाह व कामयाबी की राह क्या है इसे इनसान बतौरे ख़ुद नहीं जान सकता। इसका इल्म ख़ुदा को है जिसे वह वह्य के ज़रिए अपने पैग़म्बरों पर नाज़िल करता है। जो लोग नबियों (अलै०) पर ईमान लाकर ख़ुदा की भेजी हुई हिदायत को क़बूल कर लेते हैं, और नफ़्स और शैतान की शरारतों और बुरे आमाल से बचने के लिए ख़ुदा से दुआ और पनाह माँगते रहते हैं वे सच्चा रास्ता पा लेते हैं, और उसपर चलते हुए अपने रब से जा मिलते हैं। इसके विपरीत जो अल्लाह और उसकी हिदायत से मुँह मोड़ ले, ख़ुदा हिदायत को ज़बरदस्ती उसपर मुसल्लत नहीं करता और जिसे ख़ुदा हिदायत न दे उसे फिर कहीं से

हिदायत नहीं मिल सकती। मोमिन बन्दा यही सब कुछ जानकर ख़ुद को ख़ुदा के हवाले कर देता है और नफ़्स और शैतान की शरारतों से बचने के लिए ख़ुदा से पनाह चाहता रहता है।

तौहीद व रिसालत की गवाही

"मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई माबूद नहीं और मैं गवाही देता हूँ कि मुहम्मद (सल्ल०) उसके बन्दे और रसूल हैं।"

ये कुछ अल्फ़ाज़ हैं मगर इन्हीं पर इस्लाम की अज़ीम इमारत खड़ी होती है, इन्हीं से वह दरख़्त फूटता है जिसके बारे में क़ुरआन मजीद में है —

"अल्लाह ने कलिमे तय्यिबा की मिसाल पाकीज़ा दरख़्त से दी है, उसकी जड़ मज़बूत है और उसकी शाख़ें आसमान में फैली हैं, वह अपने रब के हुक्म से हर वक़्त (अच्छे) फल देता है..... अल्लाह इस पुख़्ता बात से ईमानवालों को दुनिया व आख़िरत में क़रार व सबात (स्थिरता एवं दृढ़ता) बख़्शता है।"

यही वह कलिमा है जिसके बारे में अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ने फ़रमाया था —

"इस कलिमा को क़बूल करो, अरब और ग़ैरअरब के मालिक बन जाओगे।" और दुनिया ने देखा कि मुसलमान ने जब इस कलिमा को दिलो-जान से क़बूल कर लिया और पूरी ज़िन्दगी में अल्लाह के फ़रमाँबरदार बन्दे बन गए तो थोड़ी तादाद में होने के बावजूद थोड़ी ही

मुद्दत में अरब और ग़ैरअरब के मालिक बन गए। अल्लाह चाहता है कि यह महान कलिमा हर मोमिन की रग-रग में रच-बस जाए। बच्चा पैदा होता है तो कान में अज़ान और इक़ामत कही जाती है, दिन में पाँच बार अज़ान और पाँच बार इक़ामत होती है। तशहहुद में यह कलिमा अल्लाह के सामने हर नमाज़ में पढ़ा जाता है और हर तक़रीर और निकाह के हर ख़ुतबे में इस कलिमा की शहादत दी जातीं है। यह इसलिए कि हमें याद रहे कि हम हर जगह, हर वक़्त ख़ुदा के बन्दे और उसके रसूल के पैरो (अनुयायी) हैं।

अल्लाह से डरो और उसकी नाफ़रमानी से बचो

इन बातों के बाद अल्लाह के रसूल (सल्ल०) क़ुरआन मजीद की चार आयतों की तिलावत करते। इनमें से हर आयत में है — ''अल्लाह से डरो और उसकी नाफ़रमानी से बचो।'' अल्लाह का तक़वा दुनिया व आख़िरत की सारी कामयाबियों की कुंजी है। इसी लिए अल्लाह के रसूल (सल्ल०) इसकी बार-बार याददिहानी कराते, ख़ास तौर से शादी-ब्याह के मौक़े पर जबकि ख़ुदा की नाफ़रमानी के अंदेशे ज़्यादा होते हैं। हक़ीक़त यह है कि इनसान ख़ुदा के मुक़ाबले में कुछ भी नहीं है, वह अपनी एक-एक साँस, पानी की एक-एक बूँद और खाने के एक-एक दाने के लिए ख़ुदा का मुहताज है। लेकिन वह दौलत व ताक़त पाकर, और अब तो उसके बिना ही, आपे से बाहर हो जाता है। मगर कब तक! एक दिन आता है जबकि उसका सब कुछ छिन जाता है, बड़ी-बड़ी क़ौमें उठीं और ग़लत बात की तरह दुनिया से मिट गईं या औंधे-मुँह ज़मीन पर गिर गईं। इनसान एक मुहताज बन्दा है और बस। उसे

ख़ुदा के सामने बन्दा बनकर ही रहना चाहिए। एक दिन सबको उसकी अदालत में हाज़िर होना है और अपने एक-एक अमल का ज़वाब देना है। फिर ख़ुदा के फ़रमाँबरदार बन्दों को हमेशा रहनेवाली जन्नत मिलेगी और अवज्ञाकारियों और नाफ़रमानों को जहन्नम का भयानक अज़ाब। मुबारक हैं वे लोग जो तक़वा व परहेज़गारी की ज़िन्दगी गुज़ारें और ख़ुशी व ग़म, किसी हाल में न भूलें कि उन्हें अपने हर काम का ख़ुदा को जवाब देना है।

इनसानों और रिश्तेदारों के हक़ अदा करो

तक़वा और परहेज़गारी की तालीम के अलावा ऊपर बयान की गई आयत में इनसानों और रिश्तेदारों के हक़ की अदायगी पर ज़ोर दिया गया है। सब इनसानों को ख़ुदा ने पैदा किया है, सब एक ही माँ-बाप की औलाद हैं, इसलिए सब एक ही ख़ानदान के लोग, आपस में रिश्तेदार और भाई-भाई हैं, इनके एक-दूसरे पर हक़ और अधिकार हैं। इन हुक़ूक़ की अदायगी उसी तरह ज़रूरी है जिस तरह अल्लाह की बन्दगी। हदीसों से मालूम होता है कि अल्लाह कुफ़्र व शिर्क के अलावा अपनी हक़तलफ़ी माफ़ कर सकता है मगर बन्दों की हक़तलफ़ी माफ़ नहीं करेगा, जब तक कि बन्दे ख़ुद माफ़ न करें।

निकाह के मौक़े पर इनसानी हुक़ूक़ की अदायगी और रिश्तों-नातों का ख़याल और लिहाज़ रखने की हिदायत अपने अन्दर बहुत अहमियत रखती है। यह दुल्हा, दुलहन, सम्बन्धियों और निकाह में मौजूद अन्य लोग सबके लिए अनमोल तोहफ़ा है। अगर शौहर बीवी का हक़ अदा करे और बीवी शौहर का, औलाद माँ-बाप का हक़ अदा करे और माँ-

बाप औलाद का, रिश्तेदार— रिश्तेदार का हक़ अदा करे और पड़ोसी — पड़ोसी का, और हर इनसान— दूसरे इनसान का तो आख़िरत की हमेशा रहनेवाली जन्नत से पहले यह दुनिया जन्नत बन जाए।

इस आयत से यह बात स्पष्ट होती है कि सब इनसान एक ही माँ-बाप की औलाद हैं और इनका ख़ानदान और नस्ल एक ही है, इसलिए नस्ल और जाति के लिहाज़ से न कोई ऊँचा है और न कोई नीचा। नस्ल की वजह से ऊँच-नीच की बात ग़लत और ग़ैर-इस्लामी है।

इस्लाम पर जान दो!

दूसरी आयत के पहले हिस्से में तक़वे और परहेज़गारी का हक़ अदा करने की नसीहत है। तक़वा का हक़ क्या है? यह कि हम पूरी ज़िन्दगी में अल्लाह की नाफ़रमानी से बचें। इंफ़िरादी (व्यक्तिगत) ज़िन्दगी हो या इजतिमाई (सामूहिक), हम घर के बाहर हों या घर के अन्दर, हम फ़िज़ा में सफ़र कर रहे हों या ख़ला में; हर वक़्त, हर जगह और हर हाल में अल्लाह के मुख़लिस बन्दे और उसके रसूल की सच्ची पैरवी करनेवाले हों, जहाँ तक हमारे बस में हो, हम अपनी तमाम सलाहियतें और क़ुव्वतें अल्लाह की बन्दगी के लिए निचोड़ दें।

आयत के दूसरे हिस्से में इस बात पर ज़ोर दिया गया है कि ख़ुदा की फ़रमाँबरदारी की रविश (नीति) ज़िन्दगी की आख़िरी साँस तक क़ायम रहे। मौत का फ़रिश्ता जब भी आए हमें फ़रमाँबरदार और परहेज़गार पाए और हम अपने रब की बन्दगी करते-करते उसके सामने जा पहुँचें।

इसका मतलब यह भी है कि इस्लाम और ज़िन्दगी में से एक के

ुनने का सवाल पैदा हो तो हम ज़िन्दगी को इस्लाम पर क़ुरबान कर ।। हमेशा-हमेशा रहनेवाले अज़ाब का सबब है वह मौत जो कुफ़्र या नेफ़ाक़ की हालत में आए और उस मौत से बेहतर कोई मौत नहीं जो अल्लाह के लिए और अल्लाह की राह में हो। शहादत की मौत सारे ुनाहों को धो डालती है। शहीद को मरते ही जन्नत मिलती है। शहादत ोमिन का लक्ष्य है। शहादत की तमन्ना अल्लाह के रसूल (सल्ल०) ा की है।

सीधी-सच्ची बात कहो!

तीसरी आयत में तक़वा और परहेज़गारी की नसीहत के बाद केतनी अहम हिदायत दी गई है — ''(हमेशा) सीधी-सच्ची बात कहो।'' दिल के बाद सबसे अहम और सबसे नाज़ुक अंग ज़बान है। एक बार नबी (सल्ल०) ने इस्लाम के अहम आमाल की वज़ाहत के ाद हज़रत मआज़ (रज़ि०) से फ़रमाया — ''क्या मैं तुम्हें बताऊँ कि न आमाल का दारोमदार किसपर है?'' फिर आप (सल्ल०) ने अपनी ज़बान पकड़ी और फ़रमाया —

''इसे अपने क़ाबू में रखो।''

(तिरमिज़ी, इब्न माजा, अहमद)

एक और मौक़े पर आप (सल्ल०) ने फ़रमाया —

''जो शख़्स मुझे ज़बान और शर्मगाह की ज़मानत दे, मैं उसे जन्नत की ज़मानत देता हूँ।'' (बुख़ारी, मुसलिम)

एक और मौक़े पर आप (सल्ल०) ने फ़रमाया —

''जो कोई अल्लाह और आख़िरत पर ईमान रखता हो वह भली बात कहे वरना ख़ामोश रहे।'' (बुख़ारी, मुसलिम)

एक और हदीस में है —

''बन्दा अल्लाह की नाराज़गी की बात करता है और उसे अहमियत नहीं देता हालाँकि उसके नतीजे में वह जहन्नम की गहरी खाई में जा गिरता है।'' (बुख़ारी, मुसलिम)

हक़ीक़त यह है कि अल्लाह और बन्दों के जितने हक़ ज़बान से मारे जाते हैं किसी और अंग से नहीं मारे जाते और कभी-कभी इनसान को ख़बर भी नहीं होती। झगड़ों और फ़ितना-फ़साद की शुरूआत आम तौर से ज़बान से होती है। अगर हम कम बोलें, सोचकर बोलें, गुनाह की बात न करें, ज़बान से किसी को दुख न दें और हमेशा भली बात कहें तो घर और बाहर की ज़िन्दगी बड़ी ही ख़ुशगवार हो जाए।

ख़ुदा व रसूल की इताअत में दुनिया व आख़िरत की कामयाबी है

चौथी सबसे अहम और काँटे की बात कही गई है — ''जो अल्लाह और उसके रसूल की इताअत करेगा वह बड़ी कामयाबी पाएगा।'' यह बात ख़न्दक़ की लड़ाई के फ़ौरन बाद कही गई, जबकि पूरा अरब मदीना की छोटी-सी बस्ती को ख़त्म करने के लिए उमड़ आया था और यह सिर्फ़ अल्लाह का फ़ज़्ल था कि यह ख़तरनाक मुहिम नाकाम हो गई थी। दुनिया ने देख लिया कि मुसलमान दो-तीन साल ही में अरब पर छा गए। और अरब से उठे तो सभ्य दुनिया के बहुत बड़े हिस्से पर उन्होंने इस्लाम का परचम लहरा दिया। वक़्त की सबसे बड़ी

ो ताक़तों, ईरानी शहंशाही और रोमन एम्पायर ने मुसलमानों को कुचल देना चाहा, मगर वे पाश-पाश हो गईं। मुसलमान दुनिया के हनुमा बन गए, और उन्हें वह कामयाबियाँ मिलीं जो कभी किसी क़ौम को न मिली थीं। ये दुनिया की कामयाबियाँ थीं, आख़िरत की कभी न ख़त्म होनेवाली कामयाबियाँ तो हर सच्चे मुसलमान के लिए हैं ही!

शादी-ब्याह के पहलू से सोचिए तो इस्लाम का रास्ता ही कामयाबी का रास्ता है। हमने बेशुमार रस्मों और बंधनों में ख़ुद को जकड़ लिया है। शादी इंतिहाई मंहगी और मुशकिल हो गई है। इस्लाम ने निकाह को आसान और कम ख़र्च बनाया है। अगर हम इस्लामी तालिमात की पाबन्दी करें तो ज़िन्दगी आसान, ख़ुशगवार और कामयाब हो जाए।

शादी-ब्याह के सिलसिले में इस्लामी हिदायतें

सही इंतिख़ाब

सही इंतिख़ाब पर पूरी ज़िन्दगी की कामयाबी का दारोमदार है ग़लत इंतिख़ाब का नतीजा ज़िन्दगी-भर की परेशानियों और ख़राब औलाद की शक्ल में सामने आता है। इस सिलसिले में देखने की असल चीज़ नेकी और दीनदारी है, अल्लाह के रसूल (सल्ल०) का इरशाद है —

''औरत से निकाह चार चीज़ों की बुनियाद पर होता है : 1. दौलत, 2. नस्ल, 3. हुस्न, 4. दीन। तो ऐ नेक बख़्त! दीनदार औरत को हासिल कर।'' (बुख़ारी, मुसलिम)

मर्द में अच्छे अख़लाक़ के अलावा कमाने की सलाहियत को भी देखना चाहिए।

ऊँच-नीच

ग़ैर बिरादरी में शादी को ग़लत समझना और किसी बिरादरी को ऊँचा और किसी को नीचा ख़याल करना ग़लत और ग़ैर-इस्लामी है। नबी (सल्ल०) का इरशाद है —

''किसी अरबी को अजमी (ग़ैर-अरबी) पर और किसी गोरे को किसी काले पर कोई बरतरी नहीं, तुम सब आदम के बेटे हो और आदम मिट्टी के थे।''

अल्लाह के रसूल (सल्ल०) और प्यारे सहाबा (रज़ि०) ने नस्ल

और दौलत का लिहाज़ किए बिना मुख़्तलिफ़ ख़ानदानों में शादियाँ कीं और लड़कियाँ दीं, हुज़ूर (सल्ल०) ने तो अपनी फूफीज़ाद बहन हज़रत ज़ैनब (रज़ि०) का निकाह अपने आज़ाद किए ग़ुलाम हज़रत ज़ैद (रज़ि०) से कर दिया, जबकि अरबों में ग़ुलाम की कोई हैसियत न थी।

महर

महर हैसियत के मुताबिक़ होना चाहिए और इतना होना चाहिए कि आसानी के साथ अदा हो सके। जिस निकाह में महर के अदा करने की नीयत न हो वह निकाह नहीं है, बेहतर है कि महर निकाह के वक़्त दे दिया जाए, वरना जल्द से जल्द अदा कर दिया जाए।

लड़के-लड़की की मरज़ी

शादी बालिग़ लड़की और लड़के दोनों की मरज़ी से होनी चाहिए। निकाह के सही होने के लिए यह लाज़िमी शर्त है।

दहेज और तिलक

लड़कीवालों से दहेज की माँग शरीअत के मुताबिक़ बिलकुल ग़लत है। रक़म की माँग और भी ग़लत है। कोशिश करनी चाहिए कि शादी सादगी और बग़ैर लेन-देन के हो।

फ़ुज़ूलख़र्ची और दिखावा

क़ुरआन के मुताबिक़ दिखावा ईमानवालों का काम नहीं —

''ये वे लोग हैं जो अपनी दौलत लोगों के दिखावे के लिए ख़र्च करते हैं और अल्लाह और आख़िरत पर ईमान नहीं रखते।''

(क़ुरआन, 4:28)

इसी तरह क़ुरआन मजीद में फ़ुज़ूलख़र्ची से बचने का हुक्म है—

''और फ़ुज़ूलख़र्ची हरगिज़ न करो, फ़ुज़ूलख़र्ची करनेवाले यक़ीनन शैतान के दोस्त हैं और शैतान अपने रब का नाशुक्रा है।'' (क़ुरआन, 17:27)

शादी-ब्याह को रस्मों से पाक, मुख़्तसर, सादा, आसान और कम ख़र्च बनाना चाहिए। लड़कीवालों के ज़िम्मे कोई दावत नहीं, वलीमा लड़के पर है और वह भी इतना कि आसानी के साथ हो सके, और वलीमा सुन्नत है, फ़र्ज़ नहीं। बाजे और नाच-रंग से तो ज़रूर बचना चाहिए। परदे और नमाज़ में कोताही न होनी चाहिए।

निकाह एलान से होना चाहिए

निकाह के सही होने के लिए कम से कम दो गवाहों की मौजूदगी ज़रूरी है। बेहतर है कि निकाह आम मजमे में और मसजिद में हो, निकाह के ख़ुतबे के बाद निकाह पढ़ानेवाला दुल्हा से कहे:— ''मैंने.....का, जो.....की बेटी है, निकाह आपके साथ बएवज़.....महर किया, आपने क़बूल किया?'' और दुल्हा बुलन्द आवाज़ से कहे —

''हाँ, मैंने क़बूल किया।''

इसके बाद दुआ की जाए। दुआ के बाद मौजूद लोगों में छुहारा या कोई और मीठी चीज़ बाँटी जाए।